08 / 04 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

लौकिक और अलौकिक सम्बन्धों के त्याग द्वारा महात्यागी होने का अनुभव

➢➢ आज बापदादा मुझ आत्मा का हाथ पकड़ सैर करा रहे हैं, चलो करें हम सैर रूहानी चलो करें हम सैर

➳ _ ➳ बाबा का साथ सब कुछ अलौकिक, बादलों से नीचे देखने में पृथ्वी लोक का नजारा बड़ा ही सुंदर दिखाई दे रहा है...

→ देवस्थान में बजती घंटियां मुझ आत्मा को अपनी और आकर्षित कर रही हैं...

→ बाबा बताते हैं बच्चे ये तुम्हारा ही स्वरूप है, याद है? आज कलयुग के अंत में भी तुम्हारी पूजा अर्चना हो रही है...

→ तुम्हारे भक्त तुमसे सुख, शांति, धन की मांग कर रहे हैं...

→ तुम्हारे को अपना इष्ट मान कर, जान कर सच्चाई को साबित करने के लिए तुम्हारी कसमें खाते हैं, देवात्मा देख रही हो...

■ अपने भव्य स्वरूप को देख मैं आत्मा रुहाब से भर जाती हूं...

➳ _ ➳ मैं अपने कल्प पहले के इस स्वरूप का अवलोकन कर रही हूं महादानी और वरदानी मैं आत्मा अब वापस इस स्वरूप की विशेषताओं को धारण करती हूं...

→ मैं आत्मा बापदादा की आंखों का नूर हूं, नए विश्व की तकदीर हूं, और अपने लक्ष्य की ओर तीव्रता से अग्रसर हूं...

→ इस ज्ञान को, रहस्य को समझ मैं देहभान से देह के सम्बन्धों से स्वयं को मुक्त करती जा रही हूं उससे जुड़े लौकिक अलौकिक सम्बन्धों का त्याग कर नष्टोमोहा बनती जा रही हूं...

→ बाप समान कर्तव्य पर स्थित हूं तो जो बाप के गुण वो मेरे भी हैं...

→ बाप समान ना होने पर उन्हें चेक कर चेंज कर रही हूं...

■ बाप समान सेवाधारी बन सर्व की न्यारी ओर प्यारी बन रही हूं...

➢➢ अल्पकालिक प्राप्तियों में नही फंसती हूं

➳ _ ➳ अल्प काल के सब सहारे नही चाहिए...

→ सर्व सम्बन्ध एक बाप के साथ हैं...

→ बाबा मुझ आत्मा पर गुण और शक्तियों की किरणें बरसा रहे हैं...

→ मैं आत्मा सर्वगुण सम्पन्न बनती जा रही हूं...

→ किसी भी आत्मा के प्रति कोई लगाव, झुकाव, घृणा नही है, कर्मों के बंधन के हिसाब किताब चुक्तु कर रही हूं...

→ अब किसी भी आत्मा के अवगुण या कर्म देख उल्टा चिंतन चलना बन्द हो चला है...

■ पर दर्शन छोड़ स्वदर्शन करनेवाली आत्मा बन गई हूं...

➳ _ ➳ श्रेष्ठ विधि द्वारा सिद्धि

→ महा त्यागी बन श्रेष्ठ वृत्तियों को धारण करती जा रही हूं...

→ हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और कल्याण की भावना रखती हूं...

→ सर्विसएबुल बन सर्विस कर रही हूं...

→ कहीं कोई बोझ नही है, उड़ती कला का अनुभव कर रही हूं...

■ विघ्न विनाशक बन सर्विस कर सफलता को पा रही हूं ।

■ बाबा से मिले गुणों और शक्तियों का अन्य आत्माओं को दान कर रही हूं।

■ मेरा स्वरूप महादानी और वरदानी का बन गया है।

■ बापदादा ने मुझ आत्मा को कमल पुष्प आसन पर विराजमान कर दिया है।

■ अपने पूज्य स्वरूप को पा मैं सिद्धि स्वरूप आत्मा बन गई हूं।